M.G.INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES

होमियोपैथी- (Homoeopathy)

- होमियोपैथीशब्द दो यूनानी शब्दो HOMOEO यानि सद्रश / समान (similar) और PATHOS यानि रोग (suffering) से बना है। होमियोपैथी का अर्थ है -सद्रश (समान) रोग चिकित्सा
- समान चिकित्सा का सरल अर्थ है कि जो रोग लक्षण जिस औषधि के सेवन से उत्पन्न होते है उन्ही लक्षणो की रोग में समानता होने पर औषधि द्वारा नष्ट किए जा सकते हैं।
- यह प्रकृति के सिद्धांत सम: समम शमयति"यानि" SIMILIA SIMILBUS CURENTUR पर आधारित है।
- इस चिकित्सा पद्धति से रोग अत्यंत निश्चयपूर्वक, जड़ से, अविलम्ब और सदा के लिए समाप्त हो जाता है।
- होमियोपैथीकी धारणा है कि प्रत्येक जीवित प्राणी में इंद्रियों के क्रियाशील आदर्श को बनाए रखने की प्रवृति होती है और जब यह क्रियायशील आदर्श विकृत होते हैं, तब प्राणी में इस आदर्श को प्राप्त करने के लिए अनेक प्रतिक्रियाएँ होती हैं। प्राणी को औषधि द्वारा उसके प्रयास में सहायता मिलती है।
- होमियोपैथीचिकित्सा पद्धति का जन्म डॉ॰ क्रिश्चियन फ़्रेडरिक सेम्यूल हेनिमन (जर्मन :1755 -1843) द्वारा लगभग दो सौ वर्ष पूर्व हुआ था।
- होमियोपैथीका आगमन भारत में कुछ जर्मन मिशनरियों और चिकित्सकों के औषधि वितरण के द्वारा हुआ।
- तथापि होमियोपैथीकि जड़ें भारत में सन 1839 में पहुंची जब Dr.JohnMartin Honigberger ने पंजाब के महाराजा रंजीत सिंह के गले के फालिस (Vocal cord Paralysis) का सफल इलाज़ किया।
- त्पश्चात श्री एम॰ एल॰ सरकार, डॉ॰ पी॰ सी॰ मजूमदार और डॉ॰ डी॰ एन॰ राय ने प्रथम भारतीय होमियोपैथीकॉलेज की स्थापना की।
- तब से आज तक यह चिकित्सा विधि राष्ट्रीय व राजकीय स्तरों पर सरकारी व गैर सरकारी नेतृत्व में फल-फूल रही है तथा एक विस्तृत जनमानस को रोग मुक्त करने में भारतीय चिकित्सा क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।
- शायद यही कारण है कि राष्ट्रीयव राजकीय स्तर पर विगत 150 वर्षो में अंतरराष्ट्रीय स्तर व मानको के अनुरूप उत्कृष्टअस्पताल, शोध संस्थान,होमियोपैथीमेडिकल कॉलेज,होमियोपैथिक प्राइवेट चिकित्सक व होमियोपैथिक डिस्पेन्सरी इत्यादि हमारे देश में अपनी पहचान बना चुकी है।
- इस वजह से आज भारत का होमियोपैथीचिकित्सा प्रणाली में सर्वोच्च स्थान हो चुका है और करोड़ो लोग इससे रोगनिवारण एवं रोजगार के स्तर पर लाभान्वित हो रहे हैं।

होमियोपैथीफार्मेसी:-

- होमियोपैथीफार्मेसी का जन्म इस विधा के संग ही हुआ, जैसे कि माँ और संतान साथ मे उत्पन्न होते हैं।
- इस फार्मेसी कि उच्चता इसी तत्त्व में हैं कि जब वह किसी भी पदार्थ के कण की चिकित्सकीय क्षमता, मिश्रण द्वारा उत्पन्न करके उस पदार्थ को चिकित्सा योग्य स्थापित कर देता है।
- पूर्व में होमियोपैथिकऔषधि, चिकित्सक स्वयं बनाते थे परंतु सन 1825 में डॉ॰ सी॰ कैसपरो (जर्मन गणराज्य) ने विश्व कि पहली होमियोपैथीडिस्पेन्सरी बनाई।
- इसीलिए होमियोपैथिक फार्मेसी एक कला होने के साथ विज्ञान भी है जो संग्रह, मिश्रण, योग, निर्माण, संरक्षण तथा मानकों के आधार पर औषधि निर्माण का कार्य होमियोपैथिक नियमो पर आधारित करते हुए चिकित्सक के अनुसार रोगियों को वितरित करती है।
- होमियोपैथिकऔषधि कोशिका (Cell) स्तर पर isotopic (समस्थानिक) रूप में गुणसूत्र (Chromosomes) स्तर पर प्रवेश करते हुए अपना चिकित्सकीय प्रभाव प्रदर्शित करते हैं।
- यह औषधि सस्ती, सुचारु, मीठी व सुलम ग्रहणीय है जिसका कोई बुरा प्रभाव (side effect) नही है।
- यह औषधि मानव शरीर के प्रतिरोधक क्षमता का विकास सुद्दृढ़ तरीके से करती है।

होमियोपैथीफार्मेसी की उपयोगिता:-

- यह एक विशिष्ट विधा है जो कि वैज्ञानिक एवं दार्शनिक सिद्धांतों पर आधारित है।
- इसकी गुणवत्ता तभी स्पष्ट होती है जब बहुत बुद्धिमत्ता और मानकानुसार औषधि तैयार की जाती है।
- यह विधा एक औषधि का मूलस्वरूप सुरक्षित रखती है जिससे कि उसके सभी क्रियाशील गुण संरक्षित रहते हैं और न्यूनतम मात्रा मे भी सर्वधिक प्रभावी रहते हैं।
- इस विधा का औचित्य प्रकृतिक पदार्थो के प्रयोग से मानव शरीर को बिना हानि पहुंचाए स्वस्थ रखना है।

MAHATMA GANDHI INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES
सत्य-धर्म-प्रेम
SEVAGRAM